e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 5, Issue 5, May 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

6381 907 438 6381 907 438 ijmrset@gmail.com www.ijmrset.com

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 5, May 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0505037 |

देश में नया सामाजिक – राजनीतिक मंथन और भारत की बदलती तस्वीर

Dr. Madhubala Singh

Assistant Professor in Sociology, Government College , Maniya , Dholpur, Rajasthan, India

सार

17वीं लोकसभा के लिए हुआ चुनाव दुनिया की बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया थी जिसमें 90 करोड़ मतदाताओं, 2293 राजनीतिक दलों और 8000 से ज्यादा प्रत्याशियों ने लोकसभा की 543 सीटों के लिए निर्वाचन प्रक्रिया में हिस्सा लिया. चुनाव बीत जाने के बाद अब – वो समय सामने है जब हम देश, ख़ासतौर पर हिंदू समाज, और शासन व्यवस्था में खलबली मचा रहे प्रमुख़ सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श करें. आने वाले समय में भारत – जो दुनिया का सबसे अधिक विविधता वाला देश है और जहां हजारों जातियों, समुदायों और जनजातियों की अपनी अलग-अलग चिंताएं तथा अपेक्षाएं हैं – उनपर दीर्घकालिक प्रभाव डालने वाले चार प्रमुख मंथन साफ दिखाई पड़ रहे हैं. सफल राजनीतिक दल वही माना जा सकता है जो इस विविधतापूर्ण आबादी को एक साथ संयोजित कर सके. सामान्यतः उसी पार्टी को सरकार बनाने के लिए संसद में सर्वाधिक सीटें मिलती हैं जो समाज के विभिन्न वर्गों को अपने साथ जोड़ने में सफल रहती है. आज की पलपल परिवर्तित होती दुनिया में द ओल्ड मैन एंड द सी के लेखक के ये शब्द युवाओं को नई राह दिखा रहे हैं। बदलाव की सकारात्मक प्रतिक्रिया का ही परिणाम है कि आज जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव हो रहे हैं और हमने उसी के बरक्स कदम भी बढाए हैं। हम अपने ही मुल्क को देखें तो आजादी के बाद अब तक 64 सालों में कई बडे परिवर्तनों के गवाह बने हैं। राजनीति हो या समाज, अर्थव्यवस्था हो या फिर संस्कृति, कोई भी समय की गति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है और इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण रोल यदि किसी का रहा है तो वह है युवा का। इस दौरान यदि कॅरियर के प्रति युवाओं के दृष्टिकोण की बात न की जाए तो बदलाव की ये कहानी अधूरी ही रह जाएगी। सोचिए आजादी के समय हमारे युवाओं के पास कॅरियर के कितने विकल्प मौजूद थे? प्रशासनिक सेवाएं, सेना, शिक्षा या फिर गिनी चुनी सरकारी नौकरियों के अलावा बताने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। लेकिन आज इस तस्वीर में बडे बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। कॅरियर क ािंसिसनेस, जॉब ऑप्शन्स, डिसीजन मेकिंग जैसी न जाने कितनी चीजें ऐसी हैं, जो पहले कभी परिदृश्य में थी ही नहीं। ऐसे में हम यहां पिछले 6 दशक के 6 सबसे बडे बदलावों की बात कर रहे हैं। ये वे अभूतपूर्व परिवर्तन हैं, जो भविष्य की शानदार इमारत की नींव रख रहे हैं।

परिचय

स्वतंत्रता के बाद केवल कांग्रेस पार्टी ही ऐसी थी जिसने सबको एक साथ जोड़ने की भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह किया था. कांग्रेस ने एक ऐसी व्यवस्था का विकास किया था जिसमें विभिन्न जातियों के लोगों के साथ ही कमजोर वर्गों के लोगों को भी सांकेतिक प्रतिनिधित्व मिल जाता था. सत्ता की सामाजिक संरचना सरल थी; नौकरशाही और संस्थागत सत्ता शहरी सवर्णों के कब्ज़े में रही और कृषि प्रधान ग्रामीण इलाकों में स्थानीय प्रमुख़ जातियों के सामंती तत्वों के साथ गठबंधन के सहारे लंबे समय तक उसका शासन चलता रहा. इसी के साथ पूरक रूप में गरीबों के लिए कल्याण योजनाएं और आरक्षण नीति के माध्यम से दलित और आदिवासी आबादी को सांकेतिक प्रतिनिधित्व मिलता रहा. धर्मनिरपेक्षता की घोषित प्रतिबद्धता के साथ आजादी के बाद के हालात में कम से कम सुरक्षा के आश्वासन के कारण उसे मुस्लिम वोट भी मिलते रहे. सबको साथ लेकर चलने या लोक सहयोजन के इस मॉडल ने दशकों तक अच्छा काम किया, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह सामाजिक रूप से उपलब्ध सर्वोत्तम मॉडल भी है. सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर किसी समाज में राजनीतिक शक्ति में भागीदारी के लिए कई समानाताएं ज़िम्मेदार हो सकती हैं.

सत्ता के सामाजिक संतुलन के इस कांग्रेसी नमूने को कई चुनौतियां भी मिलीं – ख़ासतौर पर हिंदी हृदय प्रदेशों में समाजवादी विचारधारा के प्रसार से, अंबेडकरवादियों या बहुजन के आख़्यान के साथ दलितों के राजनीतिक उभार से, दक्षिण में द्रविड़ राजनीति तथा बंगाल और केरल में वाम राजनीति के प्रभावी होने से. लेकिन ये सभी अखिल-भारतीय स्तर पर मुख्य सहयोजक के रूप में नहीं उभर सके. वे बस अपने लिए क्षेत्रीय स्तर पर एक सुरक्षित स्थान बनाने में सफल हुईं या फिर एक या दो जातियों अथवा समुदायों की पार्टी के रूप में सीमित रह गईं.[1]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 5, May 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0505037 |

लेकिन, नरेंद्र मोदी के उदय ने बीजेपी को सोशल इंजीनियरिंग के नए युग में पहुंचा दिया, जहां बीजेपी ने भारतीय राजनीति में मुख्य़ सहयोजक शक्ति के रूप में कांग्रेस का स्थान ले लिया. पहले 2014 में और अब 2019 में बीजेपी विभिन्न हिंदू जातियों के साथ गठबंधन करने में सफल रही, जिसे अब हिंदू मतों का संयुक्त जाति फ़लक (यूनाइटेड स्पेक्ट्रम ऑफ हिंदू वोट्स या यूएसएचवी) नाम से जाना जाता है. पार्टी के अध्यक्ष अमित शाह ने एक-एक ज़िले में सूक्ष्म जातीय गठबंधनों के लिए जितनी मेहनत की है, वैसा भारत के राजनीतिक इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया. और, जब कांग्रेस अपने धर्म-निरपेक्षतावाद और गरीबी से लड़ने वाली नीतियों के व्यापक आख्यान के तहत काम कर रही थी, उसी समय भारतीय जनता पार्टी यह सिद्ध कर रही थी कि चुनाव हिंदुत्व की छत्रछाया और विकास के आंकाक्षावादी एजेंडे के साथ भी लड़े और जीते जा सकते हैं. साल 2014 का चुनाव ऐसा पहला चुनाव था जिसमें भारत को राजनीति और शासन के कांग्रेसी मिसाल का विकल्प मिला और ऐसा लगता है कि यह भारत के लिए नया सामान्य बनने जा रहा है.

दूसरी बात यह है कि पुराने और नए शहरी वर्ग के बीच संघर्ष तेज़ हो रहा है. पुराना शहरी कुलीन वर्ग नेहरूवादी संरक्षण प्रणाली का फायदा उठाता था और सार्वजनिक विमर्श और नीति निर्माण पर असंगत प्रभाव डालता था. इस वर्ग में ज़्यादातर लोग सामाजिक और आर्थिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों से सम्बद्ध थे. दूसरी ओर, नया या नव शहरी वर्ग ज्य़ादातर आर्थिक सुधारों का उत्पाद है, जो छोटे शहरों और गांवों की मध्यम वर्गीय आबादी से आया है. इस वर्ग को मुख्यतः धर्म, राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता के मुद्दों पर पुराने शहरी कुलीन वर्गों के साथ तीव्र मतभेदों के कारण शिक्षा जगत, संस्थानों, मीडिया और नीति-निर्माण में उनकी दख़ल से नाराज़गी रही है. नए शहरी वर्ग की चिंताएं एवं आकांक्षाएं विश्व नागरिक बनने से ज्य़ादा स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित रही हैं. वे किसी निश्चित जगह से जुड़ना चाहते हैं न कि विश्व भर में कहीं से.
नए शहरी वर्ग का उस अंतर्राष्ट्रीय वामपंथ से भी कोई सरोकार नहीं है, जिसकी मंज़ूरी पुराना शहरी कुलीन वर्ग हमेशा चाहता था. भारत के भविष्य को लेकर दोनों के नज़रिये में बुनियादी अंतर था, पर दोनों के बीच टकराव होना ही था. लेकिन, बदलाव की असली वजह सोशल मीडिया बना, जिसने नए शहरी वर्ग को आवाज़ देने के साथ-साथ समान विचारधारा वाले लोगों से जुड़ने और खुद को व्यवस्थित करने का साधन उपलब्ध कराया. सोशल मीडिया की प्रभावशाली मौजूदगी और संचार के नए साधनों पर भरोसा करते हुए नए शहरी वर्ग ने पुराने आख्यान को बदल दिया. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर के रक्षकों और विद्वानों को पता भी नहीं चल पाया कि कब उनके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई. नोएडा और लोधी रोड के बीच के इस आख्यान-युद्ध में ऐसा लगता है कि नोएडा बढ़त ले चुका है.

अपने मन की बात को मानकर यदि कोई काम किया जाता है, तो सफल होने की उम्मीद और भी बढ जाती है, क्योंकि इसे पूरा करने में व्यक्ति अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है। किसी लेखक का यह कथन आज युवाओं के सिर चढकर बोल रहा है। यदि हम आजादी के बाद सबसे बडे बदलावों की बात करें, तो कॅरियर चयन के संबंध में छात्रों को आत्मनिर्णय की आजादी मिली है। पहले जहां इस संबंध में टीचर, पैरेंट्स, परिवार के अन्य सदस्यों की अहम भूमिका रहती थी, वहीं आज किस क्षेत्र में जाना है, क्या करना है, और किस तरह करना है, का निर्णय युवा अधिकांशत: स्वयं ही करते हैं। इसमें गलत भी कुछ नहीं है, आखिर जिसे अच्छे कॅरियर के लिए संघर्ष करना है, उसे इसके लिए राह चुनने की तो स्वतंत्रता मिलनी ही चाहिए। आज बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उनके जॉब में कोई समानता नहीं हैं, लेकिन वे अपने क्षेत्रों में सफलता की नई इबारत लिख रहे हैं। इसका एकमात्र और प्रमुख कारण यह है कि उन्होंने अपनी अंतरआत्मा की बात को सुना। उस क्षेत्र का चयन किया, जिसे वे अपने लिए बेहतर समझते थे। कॅरियर विशेषज्ञ भी मानते हैं कि सफल होने के लिए जरूरी है कि उस क्षेत्र का चुनाव करें, जहां आप अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं। खुद की सुनो आजादी के बाद के उन सबसे बडे बदलावों में से एक है, जिसे आज का युवा सर्वाधिक वरीयता दे रहा है और इसी मूलमंत्र के सहारे सफलता की बुलंद इमारतों का निर्माण कर रहा है।[2]

(पुणे सार्वजनिक सभा पत्र) यह वह विचार है जिसके सहारे न जाने कितने क्षमतावान भारतीय युवा अपना जीवन संवार रहे हैं। ऐसे में पटना के कौशलेंद्र का जिक्र पूरी तरह से प्रासांगिक होगा। आइआइएम, अहमदाबाद जैसे संस्थान से एमबीए डिग्री हासिल करने वाले इस युवा ने जब प्रोफेशनली ही सही, सब्जी बेचने का काम हाथ में लिया तो लोगों की तीखी प्रतिक्रियाओं से उसे दो-चार होना पडा। लेकिन यदि कौशलेंद्र ने भी बाकी लोगों की तरह ही सोचा होता तो आज उसकी कहानी देश के लाखों युवाओं को प्रेरणा देने का काम न करती। उनका एक अलग काम आज पूरी दुनिया के समक्ष है। आज उनके शुद्ध सब्जी के आउटलेट इस व्यवसाय में कामयाबी के नए आयाम जोड रहे हैं। देश में लीक से हटकर काम करने वाले युवाओं की संख्या में इजाफा हो रहा है, तभी तो मुंबई के डिब्बे वाले अपनी अलग पहचान से दुनिया में ख्याति अर्जित कर रहे हैं, तो ऊंची डिग्री के बावजूद लीक से हटकर चलने की अभिलाषा में कोई सुपर थर्टी जैसे संस्थान चला रहा है, तो कोई रिक्शा पुलर का हीरो बनकर ओबामा का आतिथ्य स्वीकार कर रहा है। यह सब बताने की एकमात्र वजह यह है कि आज कंपटीशन के साथ-साथ लोगों की सोच में भी परिवर्तन आया है। आज कामयाबी का नया मूलमंत्र है कुछ नया सोचना और दूसरों से पहले सोचना। प्रसिद्ध विद्वान कर्लाइल का विश्लेषण इसी तथ्य को आगे बढाता है- जिन लोगों ने सभ्यता की नई राहें निकालीं, वे सदा पुराने रिवाजों और परंपराओं को तोडते चले आए। पुरानी

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 5, May 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0505037 |

रुढियों, दलीलों पर उनका कभी विश्वास नहीं रहा। बदलते हालात का ही सकारात्मक परिणाम है कि आज के विशेषज्ञ और पैरेंट्स इस तरह की सोच को आगे बढा रहे हैं। इस दौर का सबसे बडा बदलाव यह है कि युवा कॅरियर की भेडचाल में शामिल न होकर नई सोच के साथ आनेवाले समय में अवसरों के नए दरवाजे खोल रहे हैं।

विचार-विमर्श

तीसरी, बात यह है कि देश के हिंदू समाज के भीतर परिवर्तन का लालच और विकास और आधुनिकता की इच्छा तो भरपूर है, लेकिन यह सब कुछ उसे भारतीय सभ्यता के लोकाचार या जिसे हम "हिंदू आधुनिकता" कह सकते हैं के भीतर चाहिए. हर जगह लोग पुराने सामाजिक ढांचों को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे अपने वर्तमान से असंतुष्ट हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि उन्हें किस चीज की तलाश है. लोगों में आधुनिक दुनिया जैसा बनने की इच्छा है. किंतु, ज्यादा से ज्यादा लोग पश्चिमी संस्कृति की श्रेष्ठता के विचार को अस्वीकार करते हुए भी स्पष्ट रूप से नहीं जानते कि यह नई आधुनिकता किन-किन उच्च बिंदुओं से होकर गुज़रेगी. हमारे पास पश्चिमी जगत और जापान के अलावा आधुनिकता का कोई दूसरा मॉडल नहीं है. और, भारत अपने आप में दीपांकर गुप्ता के सुझाए 'आधुनिकता के भ्रम' का शास्त्रीय उदाहरण है. लोगों को इस बात का अहसास कम ही है कि आधुनिकता का अर्थ स्मार्टफोन, फेसबुक या नवीनतम कारें चलाना नहीं है. आधुनिकता का संदर्भ अनिवार्य रूप से लोग हैं; सामाजिक संरचनाएं, लैंगिक संबंध और राजनीतिक व्यवस्था जैसी बातें हैं. हिंदू राष्ट्रवादियों के बीच भी 'हिंदू आधुनिकता' बहुत ही विवादित मुद्दा है और वे इस सवाल से जूझ रहे हैं कि अंततः पूरे सामाजिक ढांचे को बदल देने वाले तेज आर्थिक रूपांतरण का सामना करते हुए वे परंपराओं और पुरानी संस्कृति तथा रीति-रिवाजों को बचाना कैसे सुनिश्चित करें. आज का युवा केवल पैसा नहीं चाहता है, बल्कि ऐसा काम करना चाहता है, जिसे करने के बाद उसे संतुष्टि तो मिले ही साथ ही साथ लोग उसका अनुसरण भी करें। इसी के चलते आज काम में पैशन को खास तवज्जो मिलने लगी है। देश विदेश में कई ऐसे उदाहरण हैं, जहां लोग अपने काम में पैशन को लेकर बडे से बडा रिस्क लेने से भी नहीं चूके हैं। फ्रांस के महान चित्रकार मिलेट के पिता किसान थे, लेकिन मिलेट की रुचि बचपन से ही चित्रकारी में थी, लोग उनका मजाक उडाते, रोजी- रोटी कमाने के लिए कुछ ढंग का काम करने की नसीहतें देते, लेकिन मिलेट का मन तो केवल चित्रकारी में ही बसा था। रंगों के संसार से उन्होंने कुछ ऐसा नाता जोडा कि आज पूरी दुनिया उन्हें दुनिया के महानतम चित्रकार के तौर पर जानती है। स्वयं अपने ही देश में अलग-अलग क्षेत्र के ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे, जहां लोगों ने कॅरियर स्टेबिलिटी, फ्यूचर, सैलरी के मामले में रिस्क उठाते हुए अपने पैशन को वरीयता दी। जरा कल्पना कीजिए कि यदि जीवन से पैशन, कुछ अलग करने का हठ खत्म हो जाता तो दुनिया का क्या स्वरूप होता? युवा सपनों की सतरंगी इबारत कहां लिखी जाती? काम में क्या कुछ लुत्फ रहता? लेकिन यह कुछ लोगों की अपने पैशन को काम से जोडने की ललक थी कि आज भी यह दुनिया उतनी ही रंगीन है, जितनी पहले थी। आज की युवा सोच इस बात को और भी प्रमाणित करती है, क्योंकि इन दिनों वह अपने कॅरियर को दस से पांच की जॉब से बांध कर नहीं बल्कि उससे कहीं आगे बढाकर देखती है। युवा अपने प्रोफेशन में पैशन का स्कोप तलाशता है।[3]

बदले भारत की बदलती परिस्थिति का ही परिणाम है कि आइआइएम अहमदाबाद से मैनेजमेंट की डिग्री लेने के बावूजद उन्होंने नौकरी को वरीयता न देकर सब्जी बेचने को प्राथमिकता दी और आज एमबीए सब्जीवाला के नाम से देश-विदेश में मशहूर हो रहे हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं नालंदा के कौशलेंद्र की। सुनते हैं उनकी जुबानी, उनकी सफलता की कहानी.. बिहार के नालंदा जिले के एक गांव से प्राथमिक शिक्षा पाने वाले कौशलेन्द्र ने उच्च शिक्षा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद से हासिल की। बचपन से ही कुछ अलग सोच रखने वाले कौशलेन्द्र अध्ययन के दौरान ही उद्यमिता के प्रति आकर्षित हुए। वे विकास एवं पिछडापन के लिए समय को पैमाना मान कर किसी भी समाज को विकसित करने की दिशा में आतुर दिखते हैं। उनका सपना पिछडे बिहार को माल खपत का बाजार न बनने देकर इसे वैश्विक मानचित्र पर बेजिटेबल हब के रूप में विकसित करने का है।

नालंदा जिले में सब्जी उत्पादन काफी होने के बावजूद किसानों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। यह मैं बचपन से देख रहा था। उसी समय मन में यह बात समा गई थी कि यदि इन्हें उचित सुविधा दी जाए तो सब्जी क्रांति के बल पर देश की दशा और दिशा दोनों सुधारी जा सकती है। सब्जी के क्षेत्र में आना चैलेंजिंग था, जिसे मुझे दोगुने उत्साह से काम करने की प्रेरणा मिली। बिहार में ही अपना प्रयोग करने का महत्वपूर्ण कारण यह था कि यहां हमें सब कुछ मालूम था और यहां लोग इतने मेहनती और जुनूनी होते हैं कि यदि उन्हें सपना दिखाया जाए, तो वे कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार रहते हैं। यह काम एक व्यक्ति नहीं, बल्कि बहुत सारे लोगों के साथ मिलकर करना ही संभव था। यही कारण है कि मैंने यहीं से शुरुआत की, लेकिन हमारा उद्देश्य एक राज्य या क्षेत्र में सीमित न होकर देश में सब्जी क्रांति लाने का है।

परिणाम

और, चौथी बात यह है कि सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के खिलाफ़ रूढ़िवाद की प्रतिक्रिया बिलकुल नई भले हो लेकिन निश्चित रूप से सामने आ रही है. आज़ादी के बाद से बढ़ती सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के बीच पुरानी वर्ण-जाति व्यवस्था टूटने के

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 5, May 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0505037 |

कारण समाज के प्रतिगामी वर्ग सामंती-जाति व्यवस्था की वकालत करते हुए महिलाओं की स्वतंत्रता छीनने के प्रयास भी कर रहे हैं. ध्यान दिया जाना चाहिए कि एक सदी से भी अधिक समय से हिंदू समाज की गति की दिशा सुधारोन्मुख है. यहां तक कि विधवा पुनर्विवाह, अंतर-जातीय खानपान से जुड़े संबंधों, जाति व्यवस्था और छुआ-छूत विरोध के हिंदू विचारों में नया हिंदुत्व भी एक कट्टरपंथी अवरोध है. हिंदू समाज में सुधारों की गति धीमी रही है, क्योंकि ये परिवर्तन आर्थिक संरचनाओं के रूपांतरण के पूरक नहीं बन सके थे. किंतु, आर्थिक सुधारों के बाद पुराने सामंती-जाति क्रम के विघटन की गति तेज हुई है.
पिछले तीन दशकों की सबसे बड़ी कथाओं में से एक है दलितों और गाँवों की निचली जातियों की और उनके पुश्तैनी पेशों का समापन जिसके साथ उन पर हावी रही प्रमुख जातियों का प्रभुत्व भी घटा है. इन बदलावों ने पुरानी सामाजिक संरचना को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है, जिससे प्रभुत्वशाली जातियां को लग रहा है कि उनकी सामाजिक और आर्थिक शक्ति तेजी से घट रही है. इसके साथ ही, सभी जातियों और लिंगों के लिए शिक्षा और आर्थिक अवसरों का प्रसार होने से सामाजिक और लिंग संबंधों में एक कम मुख़र किंतु दूरगामी पुनर्गठन की प्रक्रिया चल रही है. इससे समाज के कुछ वर्गों में गुस्सा है, जो मनुस्मृति और इसी तरह के प्राचीन ग्रंथों में दी गई व्यवस्थाओं के पक्षधर रहे हैं. उनके अनुसार, वर्ण-व्यवस्था को फिर से लागू किया जाना चाहिए और किसी को जन्म से निर्धारित पेशे को बदलने का अधिकार नहीं होना चाहिए. साथ ही, महिलाओं को पर्दे में और घरों तक सीमित किया जाना चाहिए. ये बातें बहुत शहरी युवाओं को भी आकर्षित कर रही हैं और फेसबुक और ट्विटर जैसे विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर दिखाई देती रहती हैं. '(भारतवंशी) इंडिक मॉडल' और भारत को तोड़ने में लगी ताकतों से लड़ने के लिए मिशनरी-मार्क्सवादी चिंतन को चुनौती देने के नाम पर इन लोगों ने हिंदू समाज की हर सामाजिक समस्या को उचित ठहराना शुरू कर दिया है. इनमें से अधिकांश बातें धुंधले अतीत के श्रेष्ठ समाज के भ्रम के अलावा गांवों तथा छोटे शहरों के ऊंची जाति के युवाओं के बीच नई सामाजिक-आर्थिक वास्तविकताओं में व्यक्ति-परक श्रेष्ठता की धारणाओं से तालमेल न बिठा सकने का नतीजा हैं. [4]

हमारा कल कैसा होगा, यह निर्भर करता है कि हम आज हैं क्या और हमारी भविष्य को लेकर योजना कैसी है। यह बात आज के युवाओं के मन में बैठ चुकी है। कहते है वेल स्टार्ट हाफ डन यानि किसी भी काम की सफलता उसकी बेहतर शुरुआत पर निर्भर करती है। शायद यही कारण है कि आज युवा कॅरियर के बारे में 10 वीं कक्षा में आते ही सोचने लगता है। इस दौर में ही वह तय कर लेता है कि उसे किस दिशा में जाना है। आजादी के बाद का यह दूसरा बडा परिवर्तन है। इस परिवर्तन के परिणाम भी अच्छे ही सामने आ रहे हैं। देश के तमाम शिक्षाविद भी इसे कॅरियर की राह में विगत चार पांच दशकों का सबसे बडा बदलाव मानते हैं। आजादी के समय कॅरियर के बारे में इतनी जागरूकता नहीं थी। पैरेंट्स, स्टूडेंट्स का ज्यादा से ज्यादा जोर परंपरागत शिक्षा पर ही होता था। जिसमें ग्रेजुएशन, पीजी, पीएचडी जसी शक्षिक उपलब्धियां अमूमन सबसे पसंदीदा थीं। अब तो युवा अंडर 25 में किसी कंपनी में इंजीनियर, डॉक्टर या कंपनी में टॉप लेवल पर नौकरी करते हैं। आज की तारीख में प्राइवेट व गवर्नमेंट दोनों ही सेक्टर युवा उम्मीदों को आस दे रहे हैं। कई मामलों में तो प्राइवेट सेक्टर में मिलने वाले बेहतर पैकेज, जॉब सेटिसफेक्शन जैसी चीजें सरकारी नौकरियों को भी उन्नीस साबित कर रही हैं। लेकिन पहले ऐसा बिल्कुल नहीं था। देश की आजादी के समय न तो कोई खास प्राइवेट सेक्टर था, न ही उसमें जॉब की ही बडी गुंजाइश थी। इस कारण युवा इस ओर कम ही जाते थे। नब्बे के दशक में चली उदारीकरण की बयार ने पूरी स्थिति को ही बदल दिया है। छात्रों के लिए देश-विदेश में नौकरियों के द्वार खूले। वैश्वीकरण ने इस दौर को और भी खुशनुमा बना दिया। इस दौरान तमाम विदेशी, मल्टीनेशनल कंपनियां युवाओं के लिए जॉब जंक्शन बनकर उभरीं और आजाद भारत इस भूमंडलीकरण का बडा एपीसेंटर बन कर उभरा है।

भारत में और खासकर बिहार का माहौल इस तरह का है कि अभी भी नौकरी उद्यम से बेहतर मानी जाती है। यहां स्वरोजगार वही करते हैं, जिन्हें नौकरी नहीं मिलती है। यदि कोई नौकरी करने वाला व्यक्ति स्वरोजगार की बात करता है, तो उनकी बातों की हंसी उडाई जाती है। हमारे साथ भी इस तरह की कठिन परिस्थितियां आई और शुरुआती स्तर पर किसी ने हमें सहयोग नहीं दिया। प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए काफी संघर्ष करना पडा, लेकिन यदि आप सही हैं और विजन स्पष्ट है, तो देर-सबेर सहयोगी मिल ही जाते हैं। यही मेरे साथ हुआ। यदि खुद की सुनना है, तो लोगों की बातों को नकारना ही होगा। लीक से हटकर काम करने वालों के लिए यह बहुत जरूरी है। शुरुआत में पूंजी के अलावा लीगल जानकारी जरूर प्राप्त कर लें। आप यह सोचकर आगे बढें कि कुछ नया करने के लिए दो चार कदम अकेले चलना ही पडेगा। क्योंकि आपके साथ लोग तभी जुडेंगे, जब आपका विजन उन्हें समझ में आएगा और आप उस रास्ते से गुजर चुके होंगे। टीम बनाते समय योग्यता नहीं, बल्कि यह देखना चाहिए कि टीम मेंबर भी आपका सपना देख रहा है। क्योंकि योग्यता हासिल की जा सकती है, लेकिन सपने नहीं। असफलता शब्द अपने दिमाग से हटा दें। इससे आप तब तक प्रयास करते रहेंगे, जब तक आप सफल नहीं हो जाते हैं। समाज आपको नकारेगा लेकिन आप अडिग खडे रहें। बार-बार मुझे इस काम को पूरा करना है, का ध्यान रखें।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54|

| Volume 5, Issue 5, May 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0505037 |

निष्कर्ष

देखने वाली बात यह होगी कि भविष्य में ये शक्तियां कैसे काम करती हैं. क्या बीजेपी खुद को मुख्य़ सहयोजक के रूप में बनाए रख सकेगी ख़ास कर तब जबकि कांग्रेस के विपरीत उसे ऐसे नए परिदृश्य का मुकाबला करना होगा जिसमें लगभग हर जाति – राज्य के संसाधनों और सत्ता में ज्यादा हिस्सेदारी पाने का जतन कर रही है? पुराने और नए शहरी वर्ग के बीच टकराव और तीव्र होगा. लेकिन, क्या नया शहरी वर्ग अपने ही भार से दब जाएगा क्योंकि पुराने अभिजात वर्ग के विपरीत यह सामाजिक रूप से एक समान नहीं है. इस वर्ग से होकर गहरी सामाजिक भ्रम की रेखाएं गुजर रही हैं. जब भारत मुख्यतः कृषि समाज से शहरी-औद्योगिक समाज में बदलने के मुख्य़ बिंदु तक पहुंचने की ओर बढ़ रहा होगा उसी बीच हिंदू आधुनिकता और रूढ़िवादिता की पुनर्स्थापना की इच्छाओं के बीच जारी संघर्ष जल्द ही किसी असंतुलनकारी बिंदु तक पहुंच सकता है.[5]

एशिया और पूरी दुनिया में भारत केवल उभरता हुआ देश नहीं रह गया है, भारत उभर चुका है। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का यह कथन दुनिया में भारत व भारतीयों के प्रति नजरियों में आ रहे बदलाव की एक बानगी भर है। पिछले कुछ दशकों में आया यह परिवर्तन भारतीय युवाओं कीकडी मेहनत और सराहनीय कार्यो से ही संभव हुआ है। इन्हीं क्षमताओं के बल पर हम अन्य क्षेत्रों की ही तरह स्वरोजगार की दिशा में भी बडी दूरी नाप रहे हैं। देखा भी जा रहा है कि छोटे कदम व नाममात्र की पूंजी के साथ की गई उनकी शुरुआत विभिन्न क्षेत्रों में नए कीर्तिमान रच रही है। आज उन युवाओं की कोई कमी नहीं है, जिन्होंने बडी-बडी प्रोफेशनल डिग्रियों से लैस होने के बाद भी उद्यमिता का मार्ग अपनाया है।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. जी.एच.मीड (1934), माइंड, सेल्फ़ ऐंड सोसाइटी, शिकागो युनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो.
2. एच.एम. जानसन (1963), सोसियोलॅजी : अ सिस्टमेटिक इंट्रोडक्शन, रॉटलेज ऐंड कीगन पाल, लंदन.
3. के. डेविस (1960), ह्यूमन सोसाइटी, मैकमिलन, न्यूयॉर्क.
4. पार्संस ऐंड बेल्स (1960), फैमिली सोशलाइजेशन ऐंड इंटरेक्शन प्रासेसेज़, द फ्री प्रेस, ग्लेनको इलीनॉय.
5. सी.एच. कूले (1922), ह्यूमन नेचर ऐंड द सोशल आर्डर, स्क्रिबनर, न्यूयॉर्क.

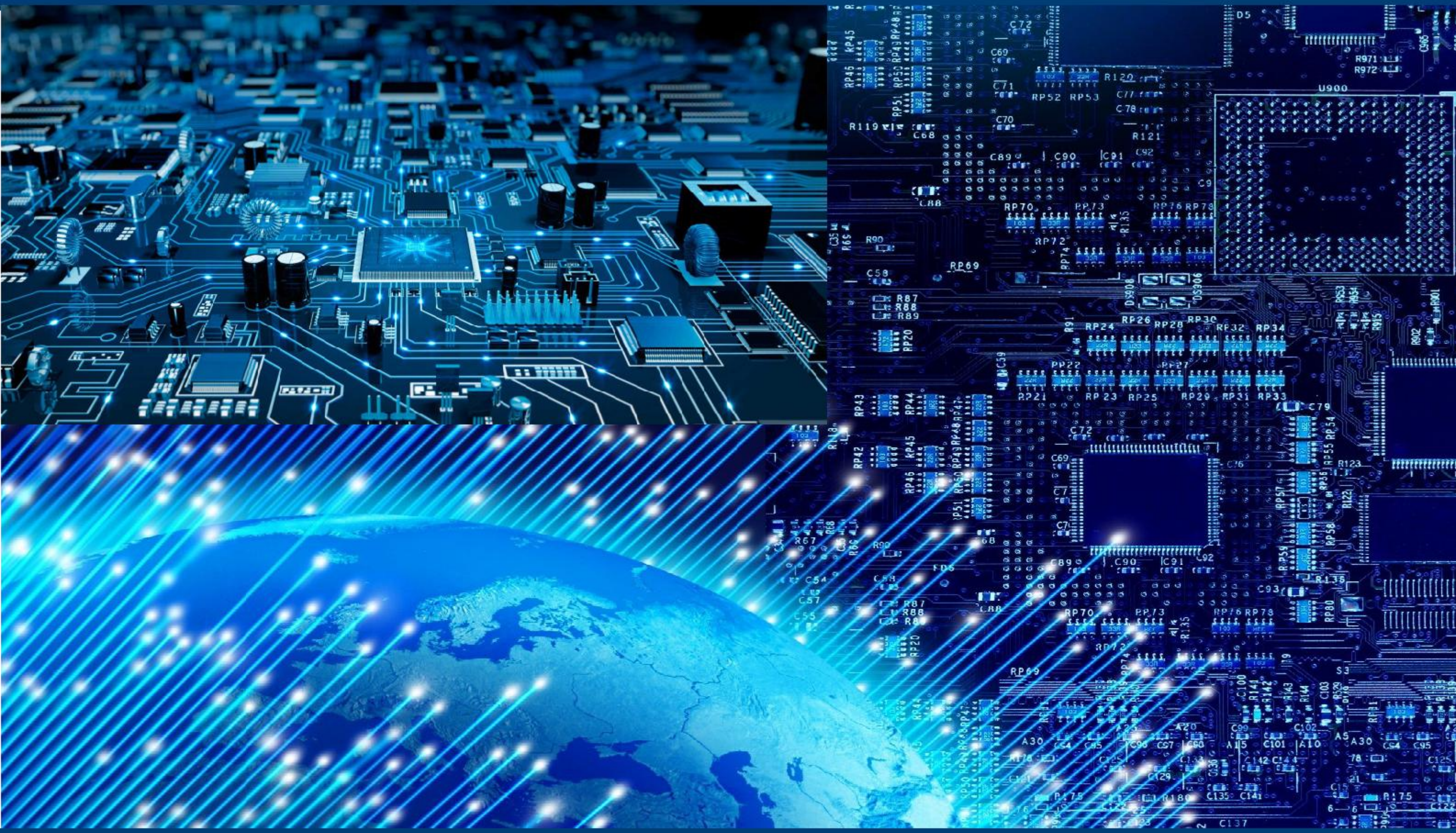

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor
7.54

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com